International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(III), April - June, 2021, pp.157-161

भक्तिः एक संक्षिप्त अवलोकन

Shweta Nagar*
Dr. Nourat Singh Meena**

सार

भक्ति शब्द ''भज'' से आया है जिसका अर्थ है 'संलग्न होना या समर्पित होना'। यह शुद्ध निःस्वार्थ प्रेम है, जो श्रद्धा से मिश्रित है। भक्ति सभी धार्मिक जीवन का आधार है। भक्ति वासनाओं और अहंकार का नाश करती है। भक्ति मन को विशाल ऊँचाइयों तक ले जाती है। भक्ति ज्ञान के कक्षों को खोलने के लिए महत्वपूर्ण है। भक्ति का समापन ज्ञान में होता है। भक्ति दो में शुरू होती है और एक में समाप्त होती है। जो इस बिंदु पर लड़ते हैंः ''श्रेष्ठ भक्ति या ज्ञान?'' अंधेरे में टटोल रहे हैं। वे असली ततव को समझ नहीं पाए हैं। परा भक्ति और ज्ञान एक हैं।

कुंजीशब्दः *भक्ति, धार्मिक जीवन,* भक्ति मार्ग, कर्म योग, ज्ञान योग।

प्रस्तावना

भक्ति शब्द का शाब्दिक अर्थ है प्रेम और भक्ति। यह संस्कृत मूल भाव से लिया गया है, जिसका अर्थ है साझा करना या भाग लेना। "भक्त" वह व्यक्ति है जो "भक्ति", या भगवान या परमात्मा के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति करता है। और, जबकि भक्ति प्रेम के सामान्य अनुभवों को आकर्षित करती है, यह भावनात्मक उत्साह या आवेशपूर्ण उत्साह से कहीं अधिक है। कठोर भक्ति के मार्ग के रूप में, इसमें समर्पित अभ्यास शामिल है, जिसमें मानसिक और शारीरिक शुद्धि, प्रार्थना और अनुष्ठान शामिल हैं, जिसका उद्देश्य सभी को परमात्मा के अनुभव में सम्मान और साझा करना है। हिंदू परंपरा में, प्राचीन पाठ भगवद गीता का अर्थ है ''भक्ति मार्ग'' या भक्ति का आध्यात्मिक मार्ग। भक्ति योग के तीन प्रकारों में से एक है, ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म योग (क्रिया का मार्ग) के साथ। प्रमुख देवता (और गीता के मुख्य पात्रों में से एक) कृष्ण सिखाते हैं कि भक्ति सर्वोच्च मार्ग है, क्योंकि यह आत्मज्ञान तक पहुंचने का सबसे आसान और प्रभावी तरीका है। भागवत गीता के साथ, (जो बड़े महाकाव्य महाभारत के भीतर स्थापित है) रामायण एक हिंदू कथा–महाकाव्य है जो भक्ति के मूल्य को धर्म, एक कर्तव्य, शाश्वत आदेश और सत्य के प्रति मार्ग की खोज करता है। भक्ति, प्रेम के एक आध्यात्मिक मार्ग के रूप में, अत्यधिक सुलभ मानी जाती है, क्योंकि यह भक्त के लिए व्यक्तिगत, रोजमर्रा के प्रेम के अनुभवों को परमात्मा के साथ संबंध बनाने की अनुमति देती है। जैसे, भगवान कृष्ण अपने भक्तों के साथ विभिन्न तरीकों से जुड़ने के लिए कई अलग–अलग रूप लेते हैं। वह एक बच्चे के रूप में प्रकट होता है और अपने बच्चे की रक्षा, पोषण और पालन करने के लिए माँ की विलक्षण इच्छा पर खेलता है। बाद में, कृष्णा एक चंचल प्रेमी है, जो रोमांटिक प्रेम और इच्छा को पैदा करता है। वह एक प्रिय मित्र और विश्वासपात्र और सम्मानित शिक्षक और मार्गदर्शक का रूप भी लेता है।

भक्ति की विधि

भगवान की पूजा करने के कई तरीके हैं। एक उनके द्वारा गाए जा रहे भजन को सुनकर है। एक तरीका है यज्ञ करना। एक और तरीका है तपस्या के माध्यम से। जितना अधिक ज्ञानी व्यक्ति धार्मिक ग्रंथों में गहराई तक उतरता है।

---

* PhD Scholar, Department of Hindi , Dr K N Modi University Niwai, Rajasthan, India.
** Assistant Professor, Department of Hindi, Dr K N Modi University Niwai, Rajasthan, India.

लेकिन साधारण व्यक्ति जो धार्मिक साहित्य को नहीं पढ़ और समझ सकता है या यहाँ तक कि भगवान के बारे में प्रवचन या ध्यान नहीं सुन सकता है, पूजा का एक आसान तरीका है, और वह है मंदिरों का दौरा करना, और मूर्ति रूप में भगवान की पूजा करके अपनी भक्ति प्रकट करना। लेकिन क्या किसी मंदिर में जाना पर्याप्त है? क्या किसी मंदिर में जाना भक्ति को दर्शाता है? भक्ति के लिए हमें भगवान के करीब ले जाना चाहिए, यह भक्ति होनी चाहिए जो भगवान से बदले में कुछ भी नहीं की अपेक्षा करती है। दामोदर दीक्षित ने कहा कि सच्चे भक्त अपनी भक्ति के लिए कोई पुरस्कार नहीं चाहते हैं।

विभिन्न हिंदू परंपराओं के संदर्भ में भक्ति

विभिन्न भक्त अलग–अलग व्यक्तिगत भगवान या देवी का पालन करते हैं जैसे कि कृष्ण, राधा, शिव, विष्णु, सरस्वती, दुर्गा, और सीता।

हिंदू धर्म में विष्णु, शिव और शक्ति जैसे विभिन्न देवताओं की पूजा के आधार पर मुख्य रूप से चार शिक्षण परंपराएं (संप्रदाय) या भक्ति खंड हैं।

- वैष्णववाद / वैष्णव भक्ति
- शैव धर्म / शिव सिद्धान्त
- शक्तिवाद / शक्ति भक्ति
- स्मार्टिज्म / पंचायतन पूजा

वैष्णववाद – विष्णु का भक्त

वैष्णव धर्म के भक्त भगवान विष्णु को सर्वोच्च भगवान के रूप में पूजते हैं। वे विष्णु के दस अवतारों (अवतारों) की भी पूजा करते हैं, जिनमें से दो सबसे अधिक पूजनीय कृष्ण और राम हैं।

शैववाद – शिव का भक्त

शैव या शैव मत के रूप में जाने जाने वाले शैव धर्म के भक्त शिव को सर्वोच्च भगवान मानते हैं। शैव लोग शिव के विभिन्न रूपों जैसे नटराज (ब्रह्मांडीय नर्तकी), लिंग (अपरिमेय) और कई अन्य प्रार्थना करते हैं। शिव के बारह रूप हैं।

शक्तिवाद – शक्ति का भक्त

शक्ति के भक्त (देवी) जिन्हें शक्ति के रूप में जाना जाता है, वे देवी शक्ति की अलग–अलग रूपों जैसे काली, लक्ष्मी, दुर्गा, और सरस्वती की पूजा करते हैं।

स्मार्टिज्म – सभी भगवान का भक्त

हिंदू धर्म की शाखा सभी देवताओं को एक समान मानती है जिसे स्मार्टिज्म कहा जाता है। यह परंपरा भगवान (ब्राह्मण) के दो विचारों का अनुसरण करती है जो सगुण ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म हैं।

सगुण ब्रह्म का अर्थ है आकार, रंग, आकार और निर्गुण ब्रह्म जैसे गुणों से युक्त परमात्मा का अर्थ है बिना गुणों वाला ब्रह्म। परम वास्तविकता निर्गुण ब्रह्म हैय हालाँकि, सगुण ब्रह्म को परम परमात्मा की प्राप्ति का साधन माना जाता है।

एक भक्त अभ्यास अवधि में विष्णु, शिव, सूर्य जैसे किसी भी देवता पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। एक बार जब आकांक्षी ने अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण कमांड हासिल कर ली, तो उसका ध्यान अंततः परम वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप पर केंद्रित करना शुरू कर देगा और वह ब्रह्म के साथ मिल जाएगा।

इस हिंदू परंपरा के अनुसार, मंदिरों में सभी पांच देवताओं (पंचदेवता) को निरपेक्ष, ब्रह्म (निराकार, निर्गुण) का व्यक्तिगत रूप (सगुण रूप सगुण) के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। यह परंपरा सभी देवताओं को समान मानती है और भक्त अपने विश्वास के अनुसार किसी भी देवता का चयन कर सकता है। इसमें अन्य देवताओं जैसे गणेश और सूर्य भी शामिल हैं।

भगवान के लिए भक्ति ६ प्रेम कैसे विकसित होता है

विश्वास प्रेम और भक्ति का प्रारंभिक बिंदु है। सबसे पहले, एक भक्त अपने भगवान में पूर्ण विश्वास महसूस करता है। फिर, भक्त निर्माता (भगवान) के लिए तीव्र प्रशंसा और आकर्षण महसूस करता है। वह ईश्वर को जानने, पूजा, प्रार्थना और प्रेम करने के लिए अधिक से अधिक तैयार हो जाता है। धीरे–धीरे, उसकी सांसारिक सभी सांसारिक इच्छाओं को छोड़ देता है और वह संतोष और एक–मनता महसूस करता है। भक्ति के उस स्तर पर पहुँच जाने के बाद, भक्त अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को भगवान की याद में जीता है।

भगवान की भक्ति विकसित करने के लिए चरण प्रक्रिया

श्रद्धा – विश्वास

सत्संग – भक्तों और आध्यात्मिक रूप से उन्नत लोगों के साथ संबद्ध

भजना–क्रिया – करना और भक्ति सेवा में भाग लेना

अनर्थ–निवृति – अवांछित भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाओ

निष्ठा – भक्ति साधना में स्थिरता

रूचि – भक्ति के लिए एक स्वाद विकसित करें

असक्ति – ईश्वर के प्रति लगाव विकसित करना

भव – ईश्वर के प्रति प्रेम की विभिन्न भावनाओं को महसूस करता है

प्रेमा – कृष्ण के लिए शुद्ध प्रेम।

भक्ति–रसामृत –सिंधु के अनुसार, भक्ति योग की प्रक्रिया इस प्रकार हैः

भक्ति भगवान को जानने की इच्छा से शुरू होती है। शुरुआत में, विश्वास होना चाहिए। फिर एक भक्त अपनी आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ने के लिए संतों और संतों के साथ जुड़ना शुरू कर देता है। तत्पश्चात, एक भक्त को एक आध्यात्मिक गुरु द्वारा दीक्षा दी जाती है जिसके मार्गदर्शन में वह सभी भक्ति सेवा करता है। भक्ति सेवा के माध्यम से, भक्त का ह्रदय शुद्ध होता है और वह अनावश्यक भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाता है। एक बार एक भक्त इच्छाओं से मुक्त हो जाता है, उसका ध्यान भगवान पर स्थिर हो जाता है जो उसे भगवान के बारे में सुनने और बात करने के लिए एक स्वाद विकसित करने में मदद करता है।

धीरे–धीरे, भक्त भगवान से जुड़ जाता है और वह भगवान के प्रति प्यार की विभिन्न प्रकार की भावनाओं को महसूस करना शुरू कर देता है। यह परमेश्वर के लिए शुद्ध प्रेम की प्रारंभिक अवस्था है।

अंत में, एक भक्त भक्ति के अंतिम चरण में पहुंचता है, जहां वह परमात्मा के साथ एक महसूस करता है। यह भगवान के लिए शुद्ध प्रेम का चरण है जिसे प्रेमा के नाम से जाना जाता है।

भक्ति के भाव

जब भक्ति योग का अभ्यास करने की बात आती है, तो सबसे पहली बात यह है कि मन में हमारी भावनाएं होती हैं। भक्ति में, एक व्यक्ति की निम्नलिखित 5 प्रकार की भावनाएं होती हैं जो भक्ति–योग के अभ्यास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शांता – शांतिपूर्ण भावना

दास्य – सेवक भक्त

साख्य – मित्र मनोवृत्ति

वात्सल्य – मातृ भाव

मधुर्य – प्रिय भाव

ये भावनाएँ (भाव) विभिन्न मानसिक दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो एक भक्त भगवान के साथ अपने संबंधों का अनुभव करते हुए ले सकता है। एक भक्त भगवान को एक दोस्त, एक वफादार नौकर, एक प्यार करने वाली माँ और एक प्यारे की तरह प्यार कर सकता है। जो भी भावनाएं आपके स्वभाव के अनुकूल हैं, उनमें भक्ति योग का अभ्यास करें।

- शांता भव भक्त शांत, शांत और शांत है। वह कई भावनाओं का प्रदर्शन नहीं करता है, हालांकि, उसका दिल तीव्र भक्ति से भरा है। वह चुपचाप और शांति से भगवान को अपने दिल से प्यार और खुशी से प्यार करता है।

उदाहरणः भीष्म। सभी त्यागियों में शांता भव है।

- दास्य भक्त (भक्त) जब कोई भक्त पूरी तरह से एक सेवक के साथ भगवान की सेवा करने की इच्छा रखता है, तो उसे दास्य भाव के रूप में जाना जाता है।

उदाहरणः श्री हनुमान एक सच्चे सेवक की तरह पूरे दिल से भगवान राम की सेवा करते थे। उन्होंने अपने गुरु की सेवा में आनंद और आनंद पाया। पवित्र शहर अयोध्या में, अधिकांश लोग भगवान की सेवा भाव से करते हैं। इनके नाम राम दास, सियाराम दास जैसे हैं।

- सखि भव सखि भव में, भक्त भगवान को एक मित्र की तरह प्यार करता है। इस भाव को भक्त के रूप में अनुभव करना मुश्किल है और भगवान दोस्तों के समान समान हैं। यह भाव भगवान के साथ एक गहरी अंतरंग मित्रता के रिश्ते का अनुभव करने के लिए शुद्धता, समझ, खुलेपन और साहस की मांग करता है। यह भव केवल उन्हीं लोगों को प्राप्त हो सकता है जो भक्ति में बहुत परिपक्व और विकसित हैं।

उदाहरणः अर्जुन और भगवान कृष्ण के बीच संबंध।

- वात्सल्य भाव भक्त भगवान को अपने छोटे बच्चे के रूप में प्यार करता है। भक्त इस भव में सभी भय और स्वार्थी इच्छाओं को खो देता है क्योंकि एक माँ अपने प्यारे बच्चे से डर नहीं सकती। न ही वह छोटे बेटे से कुछ उम्मीद कर सकती है।

उदाहरणः यशोदा का अपने पुत्र, छोटे कृष्ण के प्रति प्रेम।

- मधुर भाव मधुर भाव में, भक्त भगवान के साथ प्रेमी और प्रेमिका के रिश्ते को साझा करता है। यह भक्ति का सर्वोच्च रूप है। भक्त और भगवान एक–दूसरे के साथ एक–दूसरे को अलग–थलग होते हुए भी महसूस करते हैं। माधुर्य भाव सांसारिक प्रेम से बिलकुल अलग है क्योंकि पूर्व दिव्य के लिए निस्वार्थ प्रेम है जबकि बाद वाला अहंकार आवश्यकताओं पर आधारित स्वार्थ है।

उदाहरणः भगवान गौरांगा, जयदेव, मीरा, अंडाल और भी बहुत कुछ। भक्ति योग में सभी भावनाओं को संक्षेप में, विभिन्न प्रकार के चिकित्सकों के लिए भक्ति योग का अभ्यास करने के 9 तरीके हैं।

निष्कर्ष

भक्ति की मुख्य विशेषताएं हैंः (प) एक भक्त और उसके व्यक्तिगत भगवान के बीच एक प्रेमपूर्ण संबंध। (पप) भक्ति ने विस्तृत बलिदानों के प्रदर्शन के बजाय ईश्वर की भक्ति और व्यक्तिगत पूजा पर जोर दिया। (पपप) लिंग, जाति या पंथ के आधार पर किसी भी भेदभाव का निर्वहन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भगवान आदटराव, (2011). हिंदी भक्ति काव्य की प्रासंगिकता. Indian Streams Research Journal] Vol- I] Issue- III] DOI % 10-9780/22307850]-
2. राजेन्द्र सिंह बिष्ट, शैलेश मटियानी की कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, प्रबंधन समाजशास्त्र और मानविकी के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिका, वॉल्यूम – ७, अंक– ८, पृष्ठ (ओं): २८६ – २८६ (२०१६)
3. शिप्रा बेग, अलका श्रीवास्तव, अलका सरावगी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, सामाजिक विज्ञान में समीक्षा और अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम – ४, अंक– ४, (२०१६)
4. नीरज कुमार नामदेव, सामाजिक चेतना की परिवर्तनशीलता, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अनुसंधान जर्नल वॉल्यूम – ६ अंक– २, (२०१५)
5. डॉ.आकांक्षा मिश्रा, गोंडा (उत्तर –प्रदेश) हिंदी साहित्य में भक्तिकाल एव सामाजिक चिंतन, ज्ञान और विज्ञान, समीक्षा, साहित्य (२०१७)
6. उपासना, प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक चेतना, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम – ३ अंक– १, (२०१८)
7. सुशीला, 21 वीं सदी के संदर्भ में भक्ति काव्य की प्रासंगिकता, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्यूम – ३ अंक– २०, (२०१६)
8. डॉ. रामकुमार, राम काव्य भक्ति परम्परा और साहित्य का अध्ययन, एप्लाइड रिसर्च के इंटरनेशनल जर्नल, वॉल्यूम – १ अंक– १३, (२०१५)

❖◆❖